International Journal of
Global Multidisciplinary Research and Analytics

IJSSRA | ....
April-June 2025 | Vol 01 Issue 1

Website: www.thearyapublication.com

अनुसंधान की कार्य प्रणाली एवं नैतिकता का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

योगेश कुमार सिंह*

*शोधार्थी, शिक्षा विभाग, हंडिया पी. जी. कॉलेज, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर, उत्तर प्रदेश- 222003.
E-Mail: yks2214@rediffmail.com
DOI: **http://doi.org/10.5281/zenodo.15620075**
Received on: 20/05/2025 I Accepted on: 28/05/2025 I Published on: 10/06/2025

सारांश:

मानव जीवन में बहुत से ऐसे-ऐसे कार्य किये है जिसकी पूर्व में लोगों ने या तो सुना रहा होगा या कल्पना किया होगा। लेकिन मानव ने अपने प्रयास से जमीन से लेकर अंतरिक्ष एवं जल के अंदर तक अपनी पैठ बनाता जा रहा है। ऐसे बहुत से कार्य किये गये जिससे किसी को किसी भी प्रकार से क्षति या नुकसान न हो साथ ही किए गये कार्य मानव, पशु, जीव-जन्तु और हमारे आस-पास के परिवेश के बीच में संतुलन रखते हुए एक-दूसरे का सम्मान, बनाये गये नियम और मूल्यों के प्रति किस भी प्रकार की विरोधाभास की स्थिति उत्पन्न न हों। इसके लिए हमेशा कुछ न कुछ नया करते रहना है। जब भी कुछ नये कार्य को सत्यापित करने की बात आती है तो विधि और नियम की बात आती है जिसके माध्यम से किये गये कार्य का सत्यापित किया जा सके। कार्य करने के लिए हमें एक कार्य-विधि की जरूरत होती है जिसे हम अनुसंधान कहते हैं। अनुसंधान में हम विशिष्ट एवं व्यवस्थित तरीके से कार्य को अंजाम देते है। प्रत्येक अनुसंधान की एक निश्चित क्रिया-विधि एवं प्रारूप होता है जिसमें नियम, विधि, पद्धति, आचार एवं मूल्य सभी के लिए निश्चित होते हैं। ये प्रविधियाँ सभी को अपनाते हुए अनुसंधान किया जाय जो परिणाम सदैव सकारात्मक होंगे। इसके लिए अनुसंधानकर्ता को नैतिकता का पालन करते हुए अपने शोध कार्य को अंजाम दिया जाना चाहिए। जिससे की भविष्य में उसका एक प्रमाण के रूप में उपयोग किया जा सके एवं किसी शोध का आधार बन सके। जिसका निर्वहन मान्यताओं को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। हम अनुसंधान की कार्य प्रणाली एवं नैतिकता का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन करने जा रहे। इससे हम अनुसंधान की कार्य प्रणाली एवं नैतिकता जैसे प्रयुक्त शब्दों को स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे।

मुख्य बिन्दुः अनुसंधान, कार्य-प्रणाली और नैतिकता।

प्रस्तावना:

मानव ने बदलाव और प्रगति के लिए हमेशा कुछ न कुछ कार्य किये जा रहे है, इन कार्यों को वह निरंतर करता आ रहा है जिसकी कोई सीमा निश्चित नहीं है। एक कार्य दूसरे कार्य को आने के लिए रास्ते प्रदान कर रहा है और साथ ही साथ नये दरवाजे खालेने का कार्य करता है। यह स्पष्ट होता है कि जो आज है कल इससे बेहतर भी हो सकता है। कभी-कभी ये बदलाव लाभदायक भी हो सकता है और कभी-कभी हानिकारक भी हो सकता है। इसके पीछे भी कई कारक कार्य करते हैं। मानव प्राचीन काल से आज आधुनिक युग तक पहुंचा है इसके लिए उसने कुछ त्याग किया है साथ ही कुछ को अपनाते हुए आगे बढ़ रहा है और कुछ का त्याग करते हुए आगे बढ़ रहा है। आगे भी यह सम्भावना बनी रहेगी। इसके लिए सबसे बड़ी बात है कि मानव ने अपनी जिज्ञाशा, दर्शन एवं तर्क बुद्धि का समय-समय पर सही इस्तेमाल करके ही आगे बढ़ने का कार्य कर रहा है। इन सब कार्यो के पीछे मनुष्य की जिज्ञाशा और ज्ञान की भूख है जो शान्त होने के बजाय बढ़ती जा रही है। इसमें एक कारण है उसकी खोजी प्रवृत्ति जो प्रारम्भ से चलती आ रही है जैसे पहले पशुओं को खोजने के लिए या उनके मार्ग को जानने के लिए उनके चले गये कदमों का पीछा करके उस तक पहुंचना। जो मानव कल्पना करता था वह आज उसको हकीकत में कर चुका है जैसे मानव हवा में उड़ना और जल की गहराई में जाने के लिए कर रहा है। यहां तक की अंतरिक्ष में भी जा पहुंचा वहां भी जीवन और जीने की संभावना की तलाश में लगा है। ग्रह–नक्षत्रों की बात खुले मन से कर रहा है। मानव अन्धविश्वासों परम्परा व मूल्यों आदि के प्रति चर्चा करता है मानना न मानना उसकी आवश्यकता और उपयोगिता पर निर्भर करता है। इसके पीछे मानव का विवेक और जानने की इच्छा के साथ आने वाले समय को बेहतर बनाने की लालसा है। इसके लिए मानव के मन में कब, क्या, क्यों, कैसे, कहां और कितना जैसे प्रश्नवाचक विचारों का उठना है। ये प्रश्न मानव में अनायास ही नहीं उठे उसने इसके लिए समस्याओं से अवगत हुआ और इसके समाधान के लिए एक क्रिया-प्रणाली और विधि का उपयोग करके समाधान तक पहुंचने का प्रयास किया है।

अनुसन्धान की आवश्यकता:

मानव प्राचीन काल से लेकर आज तक जो भी प्रगति किया है उसके पीछे उसकी जिज्ञाशा या कौतुहल है। अपनी जिज्ञाशा या कौतुहल को शांत करने के लिए उसे कुछ क्रिया प्रणाली, नियमों, मूल्यों एवं सिद्धान्तों की आवश्यकता होगी जिसके माध्यम से वह अपने जिज्ञाषा या कौतुहल को उचित तरीके से शांत कर कुछ परिणात तक पहुँच सके। क्रिया प्रणाली, नियमों, मूल्यों एवं सिद्धान्तों को हम शोध, अनुसंधान, गवेषण, खोज, रिसर्च आदि

नामों से जानते है अगर देखा जाय तो अनुसंधान किसी क्षेत्र में ज्ञान की खोज करना या विधिवत गवेषणा करना होता है। अनुसंधान में वैज्ञानिक विधि का सहारा लेते हुए जिज्ञाशा का समाधान करने की कोशिश की जाती है। नवीन वस्तुओं की खोज और पुराने वस्तुओं एवं सिद्धान्तों का पुनः परीक्षण करना जिससे कि नये तथ्य प्राप्त हो सके। अनुसंधान उस प्रक्रिया अथवा कार्य का नाम है जिसमें बोधपूर्वक प्रयत्न से तथ्यों का संकलन कर सूक्ष्मग्राही एवं विवेचक बुद्धि से उसका अवलोकन विश्लेषण करके नये तथ्यों या सिद्धान्तों का उद्घाटन किया जाता है।

अनुसंधान प्रक्रिया एक चक्र के रूप में व्यवस्थित होता है इसमें कुछ अवयव होते है जो एक चक्र के रूप में व्यवस्थित किया जाता है। पक्ष-विचार-विकास-फंड-योजना-अभिलेख-प्रक्रिया-प्रकाशन के क्रम में एक क्रमबद्ध प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया से हम ज्ञान की प्राप्त करते हैं। ज्ञान की वृद्धि के साथ-साथ उसकी शक्ति में भी वृद्धि होती है और वह अपने वातावरण से अधिक अच्छा समन्वय स्थापित कर पाता है। सैकड़ों- हजारों वर्षो से चली आ रही यह मानव - यात्रा जहां जैविक क्षेत्र में कुण्डलाकार है अर्थात् जन्म-शैशव-बाल्यावस्था-युवावस्था-प्रौढ़ावस्था-वद्धावस्था-मृत्यु के वृत में घूम रही है, वहां ज्ञान के क्षेत्र में वह सदैव अपने वातावरण को जिज्ञाशा की दृष्टि से देखता है उसे समझने और नियंत्रित करने का प्रयास करता है। बहुधा उसकी दृष्टि अन्तर्मुखी हो जाती है और वह अपने को समझने एवं नियंत्रित करने का प्रयास करता है। हजारों वर्षो से वह चन्द्रमा की ओर कुतूहल भरी दृष्टि से भी देख रहा था। अन्त में 20 जुलाई 1969 को उसने उस पर पदार्पण ही कर दिया। जिज्ञाशु मानव की शक्ति असीमित है। जैसे ही उसके समाने कोई समस्या आती है उसकी समस्त शारीरिक एवं मानसिक शक्तियाँ उसके समाधान के लिए एकाग्र हो जाती है। दिन-रात कठिन परिश्रम चिन्तन एवं मनन करके जैसे भी सम्भव होता है वह उसे हल करने का प्रयास करता है। यह जरूरी नहीं कि वह अपने प्रयास में सफल ही हो, लेकिन जिज्ञासा की ज्योति को वह प्रज्वलित कर रहता है और आगे आने वाली पीढ़ी उस समस्या को हल करने में लग जाती है। कितने ही लोगों ने गौरीशंकर की चोटी तक पहुंचने के प्रयास में जीवन दिया किन्तु मनुष्य ने वहां पहुंचकर ही दम लिया।

मनुष्य कैसे ज्ञान प्राप्त करता है इसकी विवेचना करने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि ज्ञान क्या है? इस दार्शनिक प्रश्न की गहनता में न जाकर यहां इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि ज्ञान बहुत से तथ्यों स्वयं सिद्धियों सिद्धान्तों सम्बन्धों मान्यताओं एवं प्रक्रियाओं का संकलन है जो जानकारी से मनुष्य अपनी समस्याओं एवं जिज्ञाशा को शान्त करता है। प्राप्त ज्ञान उसके व्यवहार को प्रभावित करता है। किन्तु जो कुछ मनुष्य के व्यवहार को प्रभावित करे वह

सब ज्ञान नहीं है। कभी-कभी मनुष्य अन्धविश्वासों के आभास पर व्यवहार करता है परन्तु उसे ज्ञान नहीं कहा जा सकता है।

मनुष्य जैसे-जैसे प्रगति के पथ पर बढ़ता गया उसने ज्ञान प्राप्त करने की नवीन विधियां खोजी। बहुधा वह अपनी समस्या का समाधान प्रयास एवं भूल के सिद्धान्त से करता है। समस्या समाधान के लिए वह एक उपाय का उपयोग करता है और उस उपाय के प्रभावकारी न होने पर उसे छोड़कर वह दूसरे उपाय की परीक्षा करता है। इस प्रकार समस्या-समाधान के ढंग को प्रयास एवं मूल का सिद्धान्त कहते है।

ज्ञान प्राप्त करने की कई विधियां है जैसे-सत्ता (Authority) वैयक्तिक अनुभव (Personal Experience) निगमन विधि (Deductive Method) आगमन विधि (Inductive Methed) और वैज्ञानिक विधि (Scientific Method) के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करते है। इसमें अन्तिम विधि अर्थात् वैज्ञानिक विधि ही ज्ञान प्राप्त करने की प्रमाणिक विधि मानी जाती है। जैसे-जैसे मानव मस्तिष्क विकसित होता गया उसने क्रमोत्तर में अनेक विधियां खोज निकाली ज्ञान प्राप्त करने की सबसे अच्छी विधि इस समय अनुसंधान एवं वैज्ञानिक विधि है वैस्ट (1970) ने अनुसंधान और वैज्ञानिक विधि को समानार्थक बताते हुए ''अनुसंधान को वैज्ञानिक विश्लेषण की अधिक औपचारिक सुव्यवस्थित एवं गहन प्रक्रिया कहा है।'' अनुसंधान शब्द का प्रयोग अब ज्ञान की प्रत्येक शाखा के गहन अध्ययन के निमित्त होने लगा है। शिक्षा तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी अनुसंधान शब्द लोगों के लिए अब अपरिचित नहीं है। अनुसंधान की प्रकृति के सम्बन्ध में विचार करने से पूर्व इसी अर्थ में प्रयुक्त होने वाले दो अन्य शब्दों को भी देखना चाहिए। वे शब्द है शोध या गवेषणा। शोध शब्द एक प्रकार की शुद्धि, संस्कार या संशोधन का अर्थ देता है।

अनुसंधान के क्षेत्र में अग्रणी विश्वविद्यालयों एवं विशिष्ट संस्थानों के अनुसंधान सम्बन्धी नियमों से अनुसंधान की सीमा का एक प्रकार से अनुमान लगाया जा सकता है इन सभी नियमों से का विहंगावलोकन करने पर यह ज्ञात होता है कि अनुसंधान में सफल व्यक्ति वह कहा जा सकता है जिसे किसी नये सत्य की खोज की है, पुराने सत्यों को नये ढंग से प्रस्तुत किया हो अथवा प्रदत्तों में व्याप्त नये सम्बन्धों का स्पष्टीकरण किया हो। इसी दृष्टि से अनुसंधान के क्षेत्र के अन्तर्गत केवल नये सत्यों एवं नये सिद्धान्तों की खोज ही नहीं है वरन पुराने सत्यों एवं पुराने सिद्धान्तों को नया

कलेवर देना पुराने नियमों को युगानुरूप नवीनता प्रदान करना प्रदत्तों एवं तथ्यों का नये सिरे से स्पष्टीकरण करते हुए उनमें व्याप्त अन्त:सम्बन्धो का विश्लेषण करना भी सम्मिलित है।

अनुसंधान के उद्देश्यः

टर्नी एवं रोव के अनुसार अनुसंधान के चार उद्देश्य बताये हैः

- भूत तथा वर्तमान की घटनाओं की स्थिति ज्ञात करना।
- चुनी गयी घटनाओं की प्रकृति गठन तथा प्रक्रिया की विशेषताओं को ज्ञात करना।
- कुछ घटनाओं के विकास का इतिहास होने वाले परिवर्तन तथा वर्तमान स्थिति को ज्ञात करना।
- कुछ घटनाओं अथवा चरों में कार्य-कारण सम्बन्ध को ज्ञात करना।

इस प्रकार अनुसंधान शब्द की एक निश्चित परिभाषा निकालने के लिए कुछ अन्य विचार दिए गए है:

सामाजिक विज्ञानों को ज्ञान-कोश के अनुसार ‘‘अनुसंधान वस्तुओं प्रत्ययों तथा संकेतों आदि को कुशलतापूर्वक व्यवस्थित करता है जिसका उद्देश्य सामान्यीकरण द्वारा विज्ञान का विकास परिमार्जन अथवा सत्यापन होता है चाहे वह ज्ञान व्यवहार में सहायक हो अथवा कला में। पी.एम. कुरू के अनुसार ’’किसी समस्या के संदर्भ में ईमानदारी विस्तार तथा बुद्धिमानी से तथ्यो उनके अर्थ तथा उपयोगिता की खोज करना ही अनुसंधान है। ’’ डब्ल्यू.एस. मुनरों के अनुसार ‘‘अनुसंधान उन समस्याओं के अध्ययन की एक विधि है जिसका अपूर्ण तथा पूर्ण समाधान तथ्यों के आधार पर ढूढना है। अनुसंधान के लिए तथ्य लोगो के मतों के कथन ऐतिहासिक तथ्य लेख अथवा अभिलेख परखों से प्राप्त फल प्रश्नावली के उत्तर अथवा प्रयोगों से प्राप्त सामग्री हो सकती है।’’ उक्त परिभाषाओं से अनुसंधान की प्रकृति स्पष्ट हो जाती है कि अनुसंधान एक उद्देश्यपूर्ण सुव्यवस्थित बौद्धिक प्रक्रिया है, अनुसंधान के द्वारा या तो किसी नये तथ्य सिद्धान्त विधि या वस्तु की खोज की जाती है अथवा प्राचीन तथ्य सिद्धान्त विधि या वस्तु में परिवर्तन किया जाता है। अनुसंधान वस्तुनिष्ठ तथा तर्क पूर्ण प्रक्रिया है यह चिन्तन एक एक सुव्यवस्थित एवं परिष्कृत विधि है। इस प्रक्रिया में प्राथमिक अथवा माध्यमिक स्त्रोतों से प्राप्त आंकड़ों से नये ज्ञान प्राप्त किए जा सकते है। इसमें किसी जटिल घटनाक्रम को समझने के लिए विश्लेषण विधि का प्रयोग करते है इस विश्लेषण के लिए परिकल्पनाओं का निर्माण एवं परीक्षण किया जाता है। इससे प्राप्त ज्ञान सत्यापित किया जा सकता है क्योंकि यह निरीक्षण नियंत्रित एवं वस्तुनिष्ठ होता है। यह एक अनोखी प्रक्रिया है जिसके द्वारा ज्ञान के प्रकाश एवं संसार के लिए सुव्यवस्थित प्रयास

होता है। जैसा कि अनुसंधान किसी न किसी रूप में कुछ नया करने तथा ज्ञान के सूक्ष्मतम सीमा तक जाने की क्रमबद्ध प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में शामिल होने वाले सभी तत्व किसी न किसी नियम या विधि की बात करते है कि जिससे सही नतीजे पर पहुंचा जा सके। इसके जो भी अनुसंधान कर्ता है उसके निति नियम और विधि के दायरे में रहकर कार्य करना चाहेगा तभी वह एक सटीक निष्कर्ष पर पहुंच सकता है। जिसे हम सामान्यतः नैतिकता कहते है अतः अनुसंधान कर्ता की जबावदेही सुनिश्चित होनी चाहिए और उपलब्ध परिणाम का सही ढंग से विश्लेषण हो।

अनुसंधान प्रारूप की आवश्यकता होती है। सेलिज, जहोदा, ड्यूस एवं कुक ने अपनी पुस्तक ''रिसर्च मेथड इन सोशल रिलेशन्स'' में अनुसंधान प्रारूप को परिभाषित करते हुए कहा है कि 'एक अुसांधान प्रारूप ऑकड़ों के एकत्रीकरण एवं विष्लेषण के लिए उन दशाओं का प्रबंध करती है जो अुसंधान के उद्देश्यों की संगतता को कार्यरीतियों में आर्थिक नियंत्रण के साथ सम्मिलित करने का उद्देश्य रखती है।' अनुसंधान प्रारूप हमें महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर प्रदान करता है, यथा-

- अध्ययन किस विषय से संबंधित है?
- अध्ययन की क्या आवश्यकता है?
- अध्ययन किस स्थान पर क्रियान्वित किया जायेगा?
- अध्ययन के लिए किस प्रकार के ऑकड़ों की आवश्यकता होगी?
- अध्ययन के लिए आवश्यक ऑकड़े कहाँ से प्राप्त होंगे?
- अध्ययन किस समयावधि से संबंधित होगा?
- निदर्शन या प्रतिदर्शन प्रारूप क्या होगा?
- ऑकड़े एकत्रित करने के लिए कौन सी पद्धति का प्रयोग किया जायेगा?
- ऑकड़ों का विश्लेषण किस प्रकार किया जायेगा?
- अध्ययन की रिपोर्ट किस प्रकार तैयार की जायेगी अर्थात् उसका प्रारूप क्या होगा?

अनुसंधान की कार्य प्रणालीः

अनुसंधान की कार्य-प्रणाली को बिन्दुवार विवरण निम्नलिखित है-

- ❖ अनुसंधान प्रश्न: अनुसंधान प्रश्न की अनुभूति, अनुसंधान प्रश्न का अवलोकन, अनुसंधान प्रश्न की स्पष्ट व्याख्या।
- ❖ उद्देश्यों का निर्माण।
- ❖ आवश्यकतानुसार परिकल्पनाओं और उपकल्पनाओं का निर्माण।
- ❖ पूर्व में किये गये अनुसंधान प्रश्न से संबंधित अनुसंधान का गहन अवलोकन।
- ❖ उपयुक्त शोध विधिः उपकरण, ऑकड़ों का संग्रह, ऑकड़ों का विश्लेषण करने की विधि।
- ❖ परिकल्पनाओं का परिक्षण।
- ❖ प्राप्त परिणामों द्वारा अनुसंधान प्रश्न को निष्कर्ष निकालना।
- ❖ सामान्यीकरण करना।

अनुसंधान में नैतिकता:

अनुसंधान कार्य-प्रणाली के लिए उसके नियमों, विधियों एवं मूल्यों का अनुकरण करके ही सही तरीके से अनुसंधान कार्य किया जा सकता है। नैतिकता को विद्वनों इस तरह से परिभाषित किया है- रथवर्थ किडर बताते है कि ''नैतिकता की मानक परिभाषाओं में आम तौर पर आदर्श मानव चरित्र का विज्ञान या नैतिकता कर्तव्य का विज्ञान जैसे वाक्यांश शामिल है।'' रिचर्ड विलियम पॉल और लिंडा एल्डरडेफिन ने नैतिकता को परिभाषित किया है ''अवधारणाओं और सिद्धांतों का एक सेट है जो हमें यह निर्धारित करने में मार्गदर्शन प्रदान करता है कि व्यवहार प्राणियों को क्या मदद करता है या परेशान करता है।'' दर्शन शास्त्र के कैम्ब्रिज डिक्शनरी में कहा गया है कि नैतिकता शब्द आमतौर पर प्रयोग किया जाता है और कभी-कभी इसका उपयोग किसी विशेष परम्परा समूह या व्यक्ति के नैतिकता सिद्धांतों का अधिक संकीर्ण रूप से उपयोग किया जाता है। पोल एवं अनुभवी लोगों को कहा कि ज्यादातर लोग नैतिकता को सामाजिक सम्मेलनों धार्मिक मान्यताओं और कानून के अनुसार व्यवहार करने के साथ भ्रमित करते हैं और नैतिकता को एक स्टैंड अलोन अवधारणा के रूप में नही मानते है। मूल्य एवं आचार के क्षेत्र में मानव जीवन के आदर्श एवं मूल्यों की विवचना आती है, मानव जीवन के अंतिम उद्देश्य को प्राप्त करने के साधनों की विवेचना आती है और मानव के करणीय तथा अकरणीय कर्मो की विवेचना आती है। करणीय और अकरणीय कर्मो की विवेचना को ही नीतिशास्त्र कहते है।

अगर हम नैतिकता के बारे में सोचते है वे सही और गलत के बीच भेद करने के लिए नियमों के बारे में सोचते है जैसे कि गोल्डन रूल है कि ''दूसरों के साथ वैसा ही करें जैसा आप उनसे अपेक्षा करते है।'' चूँकि अनुसंधान में अक्सर विभिन्न विषयों और संस्थानों में कई अलग-अलग लोगों के बीच सहयोग ओर समन्वय का एक बड़ा सौदा शामिल होता है, नैतिक मानक उन मूल्यों को बढ़ावा देते है जो सहयोगात्मक कार्य के लिए आवश्यक है, जैसे कि विश्वास, जवाबदेही, पारस्परिक सम्मान और निष्पक्षता। उदाहरण के लिए अनुसंधान में कई नैतिक मानदण्ड जैसे कि लेखक के लिए दिशा निर्देश, कॉपीराइट और पेटेंट नीतियाँ, आंकड़े साझा करने की नीतियाँ और सहकर्मी समीक्षा में गोपनीयता के नियम, सहयोग को प्रोत्साहित करते हुए बौद्धिक सम्पदा हितों की रक्षा के लिए तैयार की गई रूपरेखा। लेकिन इन सबके बावजूद भी अधिकांश अनुसंधानकर्ता अपने योगदान के लिए क्रेडिट प्राप्त करना चाहते है और समय से पहले अपने विचारों को चोरी या खुलाशा नहीं करना चाहते है।

नैतिक मानदण्डों के आधार पर यह सुनिश्चित करने में मदद मिलती है कि शोधकर्ता को जनता के प्रति जवाबदेही को किस तरह से उचित ठहराया जा सकता है। उदाहरण के लिए शोध कदाचार पर संघीय नीतियों और हितों का टकराव मानव विषयों की सुरक्षा और जानवरों की देखभाल और उपयोग यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि सार्वजनिक धन से उचित वित्त पोषित अनुसंधानकर्ताओं को जनता के प्रति जवाबदेह ठहराया जा सके। नैतिक मानदण्ड अनुसंधान के लिए सार्वजनिक समर्थन देने में मदद करते हैं। लोगों को अनुसंधान परियोजनाओं की फडिंग करने की अधिक संभावना है यदि वे अनुसंधान की गुणवत्ता और अखण्डता पर भरोसा कर सकते हैं।

निष्कर्ष:

अतः हम कह सकते है कि मानव ने जिन समस्याओं से अवगत हुआ उसकी ज्ञान, बुद्धि, विवेक से समाधान करने का प्रयास करता रहा है। इसी का परिणाम है कि नित-नये खोजे हो रही है। मानव हर क्षेत्र में खोज करने के लिए, सामान्यीकरण के लिए वैज्ञानिक विधियों का सहारा लेता है और शोध/अनुसंधान करता है उसको शोध/अनुसंधान के लिए कुछ नियम, नीतियाँ, विधियाँ और मूल्यों का ध्यान रखना पड़ता है, जिससे कि वह अपने किए गये कार्यो की उपयोगिता को सार्वजनिक रूप से सामान्यीकरण कर सकें और आने वाले समय के लिए मानव समाज के लिए प्रेरणा बन सके साथ ही भविष्य में नये अनुसंधानकर्ता इनका ईमानदारी और जिज्ञासा के लिए अनुकरण कर सके। अंततः अनुसंधान के लिए कार्य-प्रणाली और नैतिक आचरण का औचित्य के साथ उचित

क्रिया विधि के साथ अपने कार्य को अंजाम दे सके जिससे व्यक्ति, समाज, राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान सुनिष्चित कर सके। आगे आने वाले समय में भी अनुसंधान की कार्य-प्रणाली एवं नैतिकता का उच्च मानदण्ड निर्धारित किया जा सके। जिससे आवश्यक अनुसंधान कार्य के लिए उचित दिशा और दशा का निर्धारण किया जा सके।

संदर्भ सूची:

1. डेविड बी. आर. (2015). *अनुसंधान में नैतिकता क्या है और महत्वपूर्ण क्यों है?.*
2. फाक्स. डेविड जे. (1969). द *रिसर्च प्रोसेस इन एजुकेशन*. हाल्ट रिचार्ट एण्ड विनसटन.
3. लाल, आर. बी. (2011). *शैक्षिक मूल्यांकन एवं क्रियात्मक अनुसंधान*. राज प्रिंटर्स.
4. राय, पी. (2011). *अनुसंधान परिचय*. लक्ष्मी नारायण अग्रवाल.
5. सिंह, ए. के. (2010). *मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ*. मोतीलाल बनारसीदास.
6. https://www.niehs.nih.gov/research/resources/bioethics/whatis/index.cfm

How to cite this paper:

सिंह**,** वाई. के. (2025). अनुसंधान की कार्य प्रणाली एवं नैतिकता का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. *इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ ग्लोबल मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च एंड एनालिटिक्स 01*(1), 54-62. http://doi.org/10.5281/zenodo.15620075

Copyright: © the author(s). Published by the Arya Publication Services. This is an open-access article under the CC-BY-NC-ND license (http://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/).